भूमिका

प्राचीन काल से ही स्त्रियों को शोषित किए जाने का उल्लेख मिलता है। वह रामायण की सीता हो या महाभारत की द्रोपदी या कुंती सभी का शोषण किया गया था। प्राचीन काल में भी पितृसत्ता द्वारा महिलाओं का शोषण हो रहा था आज भी हो रहा है। पितृसत्ता के चंगुल से आधुनिक समय में भी स्त्री नहीं निकल नहीं पाई हैं, बल्कि और जकड़ ली गई है। पहले तो स्त्रियों को दासी बना कर रखा जाता था, जो सिर्फ राजाओं के यौन सुख-सुविधाओं की वस्तु मात्र थी। उनका अपहरण, अग्नि परीक्षा अथवा बलात्कार के रूप में शोषण किया जाता था। आधुनिक समय में हिंसा या शोषण करने के तरीके में परिवर्तन आया है। अब महिलाओं के ऊपर तेजाब जैसा पदार्थ फेंककर उनका शोषण किया जा रहा है। उनको परिवार में मानसिक तनाव का शिकार भी होना पड़ता है।

हिंदी कथा साहित्य के चर्चित महिला लेखिका सुधा अरोड़ा के कहानियों की विशेषता यह है कि वह स्त्रियों के समस्या एवं संघर्ष को अपनी कहानियों का विषय बनाईं हैं। इन्होंने अपनी कहानियों में अपने आस-पास घटित घटनाओं को बड़ी सरल भाषा में लिपिबद्ध किया है। इनकी कहानियों में ज्यादातर महानगरों में काम करने वाली घरेलू मध्य वर्गीय एवं नौकरी करने वाली मध्य वर्ग की स्त्रियों की समस्या का चित्रण किया गया है। उन पर पितृसत्ता का वर्चस्व किस प्रकार है, का उल्लेख किया गया है। आधुनिक समय में स्त्रियाँ काफी हद तक शिक्षित और नौकरी करके आत्मनिर्भर हैं, फिर भी पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था से निकल नहीं पाई हैं और भी जकड़ ली गई हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि पुरुषों द्वारा स्त्रियों पर अविश्वास के कारण ही तमाम प्रकार के लांछन स्त्रियों के चरित्र पर लगाएँ जाते हैं, क्योंकि समाज में व्याप्त बुराइयों को वे जानते हैं कि यदि एक स्त्री किसी उच्च पोस्ट पर है, तो जरूर वह अपनी काबिलियत से उस पोस्ट तक नहीं पहुंचती है, बॉस को खुश करने से उसे वह पोस्ट मिला होगा।

समाज में व्याप्त अन्य बुराइयों विसंगतियों को दूर करने के लिए सुधा अरोड़ा ने लेखन कार्य शुरू किया है।

स्त्रियों की समस्या के पीछे क्या कारण है ? व क्या स्त्रियों की समस्या एवं संघर्ष के पीछे पितृसत्तात्मक व्यवस्था तथा पुरुष वादी विचारधारा का योगदान है ? इस लघु-शोध प्रबंध में जानने का प्रयास किया गया है।

सुधा अरोड़ा की कहानियों पर शोध करना इसलिए महत्वपूर्ण होगा, क्योंकि महिलाएँ आज भी समाज, परिवार और घर में समस्याओं से जूझ रही हैं। उन पर आज भी अत्याचार किया जा रहा है, चाहे वह मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग एवं उच्च वर्ग की महिलाएँ क्यों न हो, उनको किसी न किसी माध्यम से प्रताड़ित किया ही जाता है। आधुनिक समय में लिखी पढ़ी-लिखी महिलाएँ हैं, उनको भी समाज में व्याप्त परंपरा को देखकर स्वयं की इच्छाओं का हनन करना पड़ता है।

यह विषय इसलिए प्रासंगिक होगा, क्योंकि अन्य महिला कहानीकारों के रचनाओं पर तो शोध कार्य हो चुका है, लेकिन सुधा अरोड़ा की कहानियों पर लगभग अब तक कोई शोध सामग्री नहीं उपलब्ध है। इनकी कहानी एक नई पृष्ठभूमि पर लिखी गई है, इसलिए उनकी कहानियों पर शोध करना ज्यादा सार्थक सिद्ध होगा। इनकी कहानियों में बचपन से लेकर स्त्री होने तक का बकायदा उल्लेख किया गया है। किस प्रकार भौतिकवादी समाज में पति-पत्नी के बीच में बच्चों का बचपन उनसे छीन लिया जाता है ? यह उनकी कहानी में देखने को मिलता है। इसलिए इनकी कहानियों पर शोध करना ज्यादा प्रभावशाली होगा। इस शोध कार्य से समाज को शायद एक नई दिशा मिल सके।

सुधा अरोड़ा ने संघर्ष करती हुई स्त्री के विभिन्न क्षेत्रों का वर्णन अपनी कहानियों में किया है।

समकालीन महिला लेखिका सुधा अरोड़ा का हिंदी कथा साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने हिंदी के अलावां अन्य भाषाओं में भी लेखन कार्य किया है। शोधार्थी ने हिंदी में प्रकाशित आलेखों व पुस्तकों को आधार बनाकर हिंदी भाषा में लघु-शोध प्रबंध को पूरा किया।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में सुधा अरोड़ा के एक कहानी संग्रह '**21श्रेष्ठ कहानियाँ**' को आधार बनाया गया है, जिसमें कुल 21 कहानियाँ संकलित है। इन कहानियों में सुधा अरोड़ा ने महानगरों में रहने वाली कामकाजी महिलाओं का संघर्ष, मध्यम वर्ग की शिक्षित महिलाओं की समस्या, नौकरी करने वाली महिलाओं की समस्या, शिशु भ्रूण हत्या, दहेज, अंधविश्वास, पारंपरिक संस्कारों और रूढ़ियों के बीच पिसती स्त्रियों का शोषण, स्त्री के अधिकारों की मुक्ति, पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था द्वारा स्त्रियों की इच्छाओं का हनन, समाज में स्त्रियों का सामाजिक, आर्थिक समस्या एवं लैंगिक भेदभाव की समस्या को आधार बनाकर सुधा जी ने हिंदी कथा साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

शोध कार्य करने में अर्थ और समय का योगदान गुणवत्ता निर्धारित करने में बहुत ही होता है। यह शोध में प्रत्यक्ष रूप से दिखता तो नहीं लेकिन इसे नजर अंदाज भी नहीं किया जा सकता है। यह लघु-शोध प्रबंध उपलब्ध सामग्री, निश्चित समय सीमा व निर्धारित अर्थ के अंतर्गत ही तैयार किया गया है। अपने अध्ययन और समझ से अच्छा ही किया है फिर भी मानवीय भूल बस त्रुटियाँ हो सकती हैं। अत: इन त्रुटियों पर ध्यान केंद्रित न किया जाए।

इस लघु-शोध प्रबंध को चार अध्यायों में विभक्त किया गया है, जो क्रमशः इस प्रकार है- अध्याय- 1 सुधा अरोड़ा और उनका कथा साहित्य, अध्याय-2 सुधा अरोड़ा के प्रमुख कहानियों में विषय वस्तु एवं यथार्थ चित्रण, अध्याय- 3 सुधा अरोड़ा की कहानियों में स्त्री संघर्ष के विविध आयाम तथा अध्याय- 4 सुधा अरोड़ा की कहानियों में नारीवाद

अध्याय-1 में सुधा अरोड़ा का सामान्य परिचय के साथ-साथ उनके व्यक्तिगत जीवन एवं रचनाओं के बारे में बताया गया है तथा उनके कहानियों में सामान्य परिचय का उल्लेख करते हुए सुधा अरोड़ा का साठोत्तरी कहानी में क्या योगदान एवं महत्व है ? का उल्लेख किया गया, इसमें उन्होंने स्त्री के परिवर्तन होने का भी चित्रण किया गया है।

अध्याय-2 में स्त्री पात्र केंद्रित कहानियों के माध्यम से उनकी कहानियों में कामकाजी घरेलू और मानसिक रूप से प्रताड़ित स्त्री का वर्णन किया गया है तथा पुरुष केंद्रित कहानियों में किस प्रकार उच्च तबके का पुरुष अपने से निम्न तबके के पुरुष के साथ कैसा व्यवहार एवं आचरण करता है, का उल्लेख किया गया है।

अध्याय- 3 में मध्ययुगीन संस्कारों एवं आधुनिकता के द्वन्द में किस तरह से महिलाएँ संघर्ष कर रही हैं, उन पर मध्ययुगीन संस्कार का क्या असर पड़ रहा है, का विश्लेषण एवं विवेचन किया गया है तथा घर एवं बाहर उनके साथ समाज का कैसा व्यवहार है, उसका वर्णन किया गया है। समाज में स्त्री के साथ लिंग भेद, पुरुष सत्ता का क्या प्रभाव पड़ रहा है, का विवेचन किया गया है।

अध्याय- 4 में सुधा अरोड़ा की कहानियों में किस प्रकार का नारीवादी दृष्टिकोण है और पितृसत्ता का इनकी कहानियों में क्या भूमिका है, जानने का प्रयत्न किया गया है। वैश्विक स्तर पर नारीवाद की शुरुआत कहां और कब हुआ। भारत में नारीवाद की शुरुआत कब और कैसे शुरू हुई इनमें स्त्री एवं पुरुष समाज सुधारकों ने किन-किन स्तर पर सुधार लाया, जानने का प्रयास किया गया है।

इसके बाद उपसंहार में सभी अध्यायों के विवेचन तथा विश्लेषण से जो निष्कर्ष रूप में सामने आया उसको दिया गया है। यह सुधा अरोड़ा की कहानियों का मूल है।

शोध के अंत में आधार ग्रंथ व संदर्भ ग्रन्थों तथा पत्र-पत्रिकाओं की सूची हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित शोध प्रश्नों को लेकर कार्य किया गया है, जो इस प्रकार है- 1- सुधा अरोड़ा की कहानियों में स्त्री चेतना क्या है ?

2 किस प्रकार से स्त्रियों का शोषण एवं अत्याचार किया जा रहा है ?

3- सुधा अरोड़ा की कहानियों में स्त्रियों की आर्थिक और सामाजिक दशा कैसी है ?

4- पितृसत्ता इन स्त्रियों को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है ?

5- सुधा अरोड़ा की कहानियों में स्त्री संघर्ष के विविध पहलू कौन-कौन से हैं ?

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में विश्लेषणात्मक एवं विवेचनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।